सिद्धान्त का शैक्षिक महत्व (Educational Implications)

स्किनर का यह सिद्धान्त रचनात्मक उपयोग की दष्टि से शिक्षा के क्षेत्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है। शिक्षक एवं अभिभावक दोनों ही इस सिद्धान्त का उपयोग कर बालको के व्यवहार में वांछित विशेषताओ का विकास कर सकते हैं। शैक्षणिक महत्व की दृष्टि से इस सिद्धान्त के बारे में निम्न बात कही जा सकती हैं

(1) इस सिद्धान्त का उपयोग बालक के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाने में अच्छी तरह से किया जा सकता है। जैसे ही अपेक्षित व्यवहार की ओर बबालक के कदम पडे, तुरन्त ही उपयुक्त पुनर्बलन द्वारा इस व्य वहार को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। जब बालक यह समझने लगता है कि वह चाहे पढ़े या न पढ़े उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा है तो वह पढ़ाई के प्रति उदासीन हो जाता है। अतः बालक के सही और उचित कार्य का पुनर्वलन मुस्कराहट, सहानुभूति, प्रशंसा या अधिक अंक देकर करना चाहिये। छोटी कक्षाओं में बालक चाकलेट के लालच में लिखता पढ़ता है।

(2) इस सिद्धान्त के अनुसार वॉछित और अच्छे व्यवहार का पुनर्बलन पुरस्कार देकर तुरन्त करना चाहिये। देर करने से प्रभाव कम हो जाता है। अध्यापक जो गृहकार्य देता है यदि वह उसे दूसरे दिन ही देख लेता है और अपनी टिप्पणी उस पर लिख देता है तो छात्र गृह कार्य की ओर ध्यान देते है और नित्य करके लाते हैं। गृह कार्य का निरीक्षण न होने पर छात्र उदासीन हो जाते है और उसे करना बन्द कर देते हैं।

(3) इस सिद्धान्त का प्रयोग जटिल कार्यों को सिखाने में किया जा सकता है। स्किनर ने अपने प्रयोगों द्वारा चूहों तया कबूतरों को ऐसी अनुक्रिया सिखायी जो उनके सामान्य व्यवहार से परे थीं। ठीक इसी प्रकार व्यक्ति का व्यवहार इतना जटिल होता है कि उसे वाछित दिशा में एकदम बदलना सम्भव नहीं होता। स्किनर के अनुसार उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में विभक्त करके ही समग्र रूप से बदला जा सकता है। स्किनर की यह मान्यता शिक्षण में अत्यन्त उपयोगी है, विशेषकर वर्तनी ज्ञान एवं उच्चारण में।

(4) इस सिद्धान्त के अनुसार अनुक्रिया की उपयुक्तता एवं कार्य की सफलता अभिप्रेरणा का सबसे अच्छा स्रोत है। चूहे और कबूतर को भोजन की प्राप्ति एक अच्छा अभिप्रेरक है और विद्यार्थी को अपने सही उत्तर की जानकारी। प्रशंसा के दो शब्द, अध्यापक के प्रोत्साहित करने वाले हाव-भाव सफलता की अनुभूति, अधिक अंक, पुरस्कार, इच्छित कार्य करने की स्वतंत्रता आदि विद्यार्थी की दृष्टि से अच्छे प्रेरक हैं। स्किनर इस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में अभिप्रेरणा पर बहुत अधिक बल देते हैं।

(5) स्किनर सीखने में पुनर्बलन को बहुत अधिक महत्व देते हैं। शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन प्रणाली तथा शिक्षण मशीनों का प्रयोग इसी सिद्धान्त पर आधारित है। इस प्रणाली में छात्र अपनी गति एवं क्षमता के अनुसार सीखता है। छात्र तभी आगे बढ़ता है जब उसका सही उत्तर द्वारा प्रबलन हो जाता है अन्यथा नहीं। इस प्रणाली में सम्पूर्ण विषय-वस्तु छोटे-छोटे खण्डों में विभक्त होती है। छात्र एक खण्ड से दूसरे खण्ड की ओर तभी बढ़ता है जबकि वह पहले खण्ड को सीख लेता है। यही बात शिक्षण मशीन में भी है।

(6) स्किनर के इस सिद्धान्त के अनुसार छात्रों की प्रगति का ज्ञान उनके सीखने की गति में तीव्रता लाता है। स्किनर ने बताया कि हमारे दैनिक जीवन में ऐसे बहुत से कार्य होते हैं जिनका पारितोषिक तुरन्त न मिलकर कुछ समय पश्चात् मिलता है। उदाहरणार्थ-कलाकार, फैक्ट्री या मिल में काम करने वाले मजदूरः। फिर भी, उन्हें यह विश्वास रहता है कि उनके कार्य का पारितोषिक एक दिन उन्हें अवश्य मिलेगा और ये इसी आशा में अपने काम में बराबर मन लगाये रखते हैं।

(7) इस सिद्धान्त के अनुसार अधिगम में अधिक से अधिक सफलता तभी मिल सकती है जबकि सीखने की सामग्री को इस प्रकार आयोजित किया जाये की सीखने वाले को अधिक से अधिक सफलता तथा कम से कम असफलता का सामना करना पड़े। साथ ही, सही अनुक्रिया अथवा उत्तरों के लिये उसे तेजी से पुनर्वलन मिलता रहे और उसे स्वयं उसी की गति से सीखने का अवसर मिलता रहे।

(४) इस सिद्धान्त के अनुसार विद्यार्थी में किसी भी प्रकार के व्यवहारगत परिवर्तनों के लिये कई सोपानों से गुजरना पड़ता है। किन्तु शिक्षक के पास इतना समय नहीं होता कि वह वाछित परिवर्तनों हेत इन सभी सोपानों से गुजर सके। इस दृष्टि से शिक्षक पढ़ाने से पूर्व उन सभी उद्दीपना पर विचार कर सकता है जो उसे अपनी कक्षा अयथा स्कूल वातावरण में उपलब्ध है जिनका प्रयोग कर वह अपने शिक्षण को प्रभावी बना सकता है।

(9) व्यक्तित्व के समुचित विकास के लिये इस सिद्धान्त का भली प्रकार उपयोग किया जा सकता है। स्किनर के अनुसार-"हम अपने आप में वही होते हैं जिसके लिये हमें प्रोत्साहित या पुरस्कृत किया जाता है। जिसे हम व्यक्तित्व कहते हैं वह और कुछ नहीं बल्कि समय-समय पर प्राप्त उन पुनर्बलनों का परिणाम है जिससे हम और हमारा व्यवहार एक निश्चित साँचे में ढल जाता है।

(10) इस सिद्धान्त के द्वारा मानसिक रूप से अस्वस्थ बालकों को भी प्रशिक्षित किया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर केसोरन नाम की एक महिला मनोचिकित्सक ने एक सतर वर्षीय बूढ़े व्यक्ति की, जिसने पचास वर्ष की आयु में अपनी आवाज खो दी थी, लगभग पच्चीस दिनों में पचहतर प्रतिशत आवाज वापस ला दी थी। मनो-विश्लेषण विवि के. असफल रहने पर ही बाद में उसे क्रिया-प्रसूत अनुबन्धन से इलाज के लिये भेजा गया था ।

(11) यह सिद्धान्त अभ्यास और पुनरावृत्ति पर बल देता है। अतः शिक्षक को चाहिये कि वह इन दोनों नियमों को व्यवहार में लाकर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनायें संगीत, संस्कृत एवं गणित जैसे विषयों में इन नियमों की सार्थकता बहुत अधिक मानी गई है।

(12) इस सिद्धान्त के अनुसार ताड़ना या दण्ड न तो वांछित व्यवहार को सीखने में मदद ही करता है और न ही अवांछित व्यवहार अथवा बुरी आदतों को तोड़ने में। दण्ड के द्वारा बालक कुछ समय के लिये गलत व्यवहार करना छोड़ तो सकता है लेकिन जैसे ही दण्ड का भय अथवा उसका प्रभाव समाप्त होता है, बुरे व्यवहार की पुनरावृत्ति होने लगती है। इसलिये यह सिद्धान्त दण्ड के स्थान पर वांछित व्यवहार का पुनर्वलन कर उसे सुद्रढ़ करने एवं अवांछनीय व्यवहार की उपेक्षा कर उसे विलुप्त करने का विकल्प सुझाता है

।उपरोक्त सभी बातो का सक्रिय अनुबंधन सिद्धान्त ने ही जन्म दिया है और इसके परिणामस्वरूप आज शैक्षणिक जगत में अभिक्रमित अनुदेशन (Programmed Learning), शिक्षण मशीनों (Teaching Machines) और कम्प्यूटर निदेशित शिक्षण (Computer Assisted Instructions) ने अपनी जड़े गहरी करनी प्रारम्भ कर दी है।